मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनियां के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 30 | दिसम्बर 1990 | 50 पैसे

पूंजीवादी जनतन्त्र और मजदूर

भिलाई में सभा पर रोक

भारत में इस समय अराजकता की सीमा तक पूंजीवादी जनतन्त्र है। दसियों हजार की, लाखों की भीड़-भाड़ वाली सभायें यहां सामान्य घटनायें हैं। पर फिर भी, मजदूरों, विशेषकर कारखानों के मजदूरों की बड़े पैमाने पर शिरकत वाली कोई सभा अगर कुर्सी पर बैठे गिरोह या कुर्सी झपटने को आतुर गिरोह की कार्यवाही का हिस्सा नहीं है, तो ऐसी सभा को विफल करने के लिए पूंजीवादी जनतन्त्र अपनी हकीकत बेझिझक दिखाने में आना कानी नहीं करता। दो अक्तूबर को भिलाई में एक सभा करने पर सरकार द्वारा रोक लगाना पूंजीवादी जनतन्त्र और मजदूरों के रिश्ते समझने में सहायक लगती है। इस सम्बन्ध में यहां हम भिलाई की लोहा खदानों से एक मित्र द्वारा भेजी सामग्री का उपयोग कर रहे हैं।

आमतौर पर भिलाई को स्टील प्लान्ट के कारण जाना जाता है, लेकिन इस्पात कारखाने के साथ ही भिलाई में सैकड़ों छोटे-बड़े कारखाने हैं, जिनमें एक लाख से ज्यादा मजदूर काम करते हैं। इनमें से बहुत कम मजदूर परमानेन्ट है। स्थायी कार्यों को करने के लिए भी मैनेजमेंटें ठेकेदारी प्रथा को पाल-पोस रही हैं। जिन कानूनों से मजदूर को राहत मिल सकती है—और ऐसे कानून हैं—उन कानूनों का मैनेजमेंटें पालन नहीं करती। अकेले-दुकेले इस बारे में आवाज उठाने वाले मजदूरों का गेट रोक दिया जाता है। अधिकांश कारखानों में दो केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों को मान्यता प्राप्त यूनियनें है। मान्यता प्राप्त यूनियनें मजदूरों के हित में संघर्ष नहीं करती बल्कि यह यूनियनें मैनेजमैंटों की सेवा करती है।

ऐसे में ए.सी.सी. सीमेंट कारखाने के ठेकेदारों के 300 मजदूर अलग से संगठित हुए। इनमें से कोयला-जिप्सम अनलोडिंग का काम करने वाले 77 मजदूरों ने सुरक्षा सामग्री व बेहतर कार्य-स्थल सुविधाओं के लिए 1-3-90 से हड़ताल शुरू कर दी। मैनेजमेंट से मान्यता प्राप्त यूनियन ने मजदूरों के इस आन्दोलन का विरोध किया। मैनेजमेंट ने फुटकर गुण्डों पुलिस रूरी संगठित गुण्डों और मान्यता प्राप्त यूनियन के नेताओं की मदद से हड़ताल तोड़ने की बहुत कोशिश की पर मैनेजमेंट सफल नहीं हुई। कुछ संगठनों के सहयोग से हड़ताली मजदूरों को डटे रहने में मदद मिली थी। हड़ताल को पांच महीने होने आये तब जा कर मैनेजमेंट कुछ झुकी। 26 जुलाई को एक समझौता हुआ जिसके तहत जामुल ए.सी.सी. सीमेंट कारखाने की मैनेजमेंट ने ठेकेदार के मजदूरों को महीने में कम से कम 20 दिन काम देने की गारन्टी दी। समझौते के अनुसार ठेकेदारों के मजदूरों को प्रोविडेन्ट फन्ड और अर्नड लीव व कैजुअल छुट्टी की सुविधायें मिलेंगी। ठेकेदारों के मजदूरों (परिवार समेत) के इलाज का बन्दोबस्त और उनके बच्चों के लिये स्कूल का प्रबन्ध करने का काम ए.सी.सी. मैनेजमेंट करेगी।

मजदूरों को विगत के संघर्षों की बदौलत मिली, सुविधाओं तक में कटौती के इस समय के चौतरफा महौल में ठेकेदारों के मजदूरों की यह एक उल्लेखनीय सफलता थी। भिलाई के मजदूरों में इसका तत्काल प्रभाव पड़ा। ए.सी.सी. सीमेंट कारखाने के तीन हजार परमानेन्ट मजदूर नये संगठन के सदस्य बने। बी.के. कम्पनी, केडिया डिस्टिलरीज, भिलाई वायर्स, सिम्पलेक्स उद्योग, सूरी केमिकल्स, ज्ञान री-रोलिंग मिल्स, जनरल फैब्रिकेटर्स, जायसवाल इन्टरप्राइजेस, विश्व विशाल, रायका रोलिंग, गोलछा केमिकल्स, पुजस्टार..... दसियों हजार मजदूर नये सिरे से संगठित होने लगे। वेतन बढ़ाने, कार्य-स्थल की स्थितियां सुधारने तथा 20 प्रतिशत बोनस की मांगों के इर्द-गिर्द भिलाई में मजदूर आन्दोलन उमड़ने-घुमड़ने लगा।

शेष भाग अगले पृष्ठ पर

धनबाद से एक रिपोर्ट

मुनिडीह हड़ताल

नमक मिर्च लगाकर धनबाद क्षेत्र के गुन्डा गिरोहों की खबरें पूंजीवादी अखबार-पत्रिकायें देते रहते है। लेकिन खादानों और भारी उद्योग वाले इस क्षेत्र के मजदूर संघर्षों के समाचार उनमें कम ही देखने को मिलते है: प्रस्तुत है एक साथी द्वारा भेजी कोयला खान मजदूरों के एक महत्वपूर्ण संघर्ष, जिसमें पुलिस फायरिंग में दो मजदूर मारे गए उसकी रिपोर्ट।

1963-64 में पोलैंड सरकार के सहयोग से बनाई गई मुनिडीह कोयला खदान एशिया की सबसे बड़ी मैकेनाइज्ड खदानों में है। यहां पांच हजार लोग काम करते हैं—साढ़े तीन हजार पीस रेटेड माइनर व लोडर तथा टाइम रेटेड वर्कर खदान के अन्दर काम करते हैं, बाकी डेढ़ हजार में मैनेजमेंट स्टाफ, सुपरवाइजरी स्टाफ, ओवरमैन माइनिंग सरदार तथा आफिस स्टाफ हैं। 24 जुलाई को सब पीस रेटेड और अधिकतर टाइम रेटेड वर्करों ने अपनी मांगों के लिए हड़ताल शुरू कर दी।

सब केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों की स्थानीय शाखाओं ने इस हड़ताल का विरोध किया। इन यूनियनों ने हड़ताल के खिलाफ स्थानीय अखबारों में बयान दिये। जिला प्रशासन ने प्रचार किया कि यह मजदूरों का आन्दोलन नहीं था बल्कि कुछ बाहरी उग्रवादी तत्व गड़बड़ कर रहे थे। इस सब से मैनेजमेंट का हौसला बढ़ा। मैनेजमेंट ने हड़ताली मजदूरों से बात करने से इन्कार कर दिया तथा चार्जशीटें जारी करनी शुरू कर दी।

7 अगस्त को भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के मुख्यालय, कोयला भवन के दो हजार हड़ताली मजदूरों द्वारा घेर लेने के बाद मैनेजमेन्ट ने बात-चीत शुरू की। हड़तालियों की मांगों पर तो समझौता हो गया पर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के खिलाफ कार्यवाही पर अड़कर समझौते में पच्चर डाल दिया। असल में, पूंजी के नुमाइन्दों ने माहौल इस किस्म का बनाया था कि मजदूरों को दमन के जरिये झुकाया जा सके। ट्रेड यूनियनों और जिला प्रशासन की बयानबाजी इसी सिलसिले की कड़ी थी।

मजदूरों ने आन्दोलन को तेज करने की कोशिशें शुरू की। 7 अगस्त की रात को ही एक बड़ा मशाल जलुस निकाला गया। मेन प्रोजेक्ट गेट के पास दो हजार मजदूर धरने पर बैठ गये। और दमन के लिये माहौल बैठे पूंजी के नुमाइन्दों ने हमला शुरू कर दिया। दस अगस्त की सुबह पुलिस ने मजदूरों को धरने से उठाने के लिये पहले लाठी चार्ज किया और फिर गोलियां चलाई। पुलिस फायरिंग में दो मजदूर मौके पर ही मारे गये और कई मजदूर घायल हुये। इस प्रकार मजदूरों को तितर-बितर करके पुलिस ने गिरफ्तारियों का दौर चलाया। दहशत बढ़ाने के लिये हथियारबन्द पुलिस ने मुनिडीह की मजदूर बस्ती में मार्च किया और मैनेजमेंट की प्रोपगन्डा जीपों में बैठकर गुन्डों ने व वहां चक्कर लगाये। हड़ताली मजदूरों को डराने—धमकाने में पूंजी के नुमाइन्दे फौरी तौर पर सफल हुए—दस अगस्त तक नब्बे प्रतिशत मजदूर हड़ताल पर थे, ग्यारह अगस्त को तीस-चालीस प्रतिशत मजदूर ही हड़ताल पर रहे।

लेकिन मजदूर पुनः संगठित होने की राह पर बढ़े। फुटकर और संगठित गुन्डों के आतंक के खिलाफ़ 17 अगस्त को एक हजार से अधिक मजदूरों ने धनबाद में जलूस निकाला—विभिन्न खदानों के मजदूर इसमें शामिल हुए। इस पर जिला प्रशासन को लगा कि दमन जारी रखना फायदे की जगह नुकसानदायक हो सकता है। डी. सी. ने मजदूरों को बात चीत के लिये बुलाया और समझौते की दिशा में बढ़ने की बात की।

(शेष अगले पेज पर)

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

मार्क्सवाद

(पांचवीं किश्त)

मार्क्सवाद का नियतिवाद, यानी होना ही है से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके बारे में पिछले अंक की चर्चा को जारी रखते हुए यहां हम एक और उदाहरण ले कर सम्भव होने, आवश्यक होने और वास्तव में होने को स्पष्ट करने की कोशिश करेंगे।

पिछले अंक के उदाहरण से हमने जहां यह स्पष्ट करने की कोशिश की थी कि अब तक जो हुआ है वह होना ही था। जैसी समझ मार्क्सवाद के विपरीत है, वहां इस बार हम वर्तमान व्यवस्था, पूंजीवादी समाज का उदाहरण ले कर यह स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि आगे जो होना है वह तो होगा ही वाली समझ से मार्क्सवाद का कोई लेना-देना नहीं है। दोहरा दें, समाजवाद/साम्यवाद तो आयेगा ही आयेगा वाली पोजीशन मार्क्सवाद के विपरीत है। इस सम्बन्ध में समाजवाद/साम्यवाद के अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है, इसे हम अगले अंक में लेंगे।

आइये यहां पूंजीवाद द्वारा सामने लाई हमारे लिये सर्वोपरि महत्व की सम्भावनाओं, उनकी आवश्यकताओं और उनके वास्तविक रूप लेने के प्रश्नों पर बहुत ही संक्षेप में विचार करें। पूंजीवाद पर विस्तृत चर्चा वाले अंकों में इन सवालों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

पूंजीवाद में उत्पादक शक्तियों के विकाश ने यह सम्भव बना दिया है कि जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की तंगी वाले दसियों हजार साल से चले आ रहे दौर से हम मुक्त हो सकते हैं। पूंजीवाद में उत्पादक शक्तियों के विकाश ने जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की बहुतायत में उपलब्धता के आधार पर एक नये समाज का निर्माण सम्भव बना दिया है। घी-दूध की नदियां अब हम वास्तव में बना सकते हैं। दमन-शोषण से मुक्त तथा हंसी—खुशी भरा खुशहाल समाज, साम्यवादी समाज अब सम्भव हो गया है। कम्युनिस्ट समाज बनने की इस बढ़िया सम्भावना के साथ ही पूंजीवाद ने सम्पूर्ण मानव जाति के मिटने तक की बेहद खतरनाक सम्भावना को भी जन्म दिया है। पूंजीवाद में विनाश के एटमी और रासायनिक हथियारों का वह विकास हुआ है कि पृथ्वी से मानव का नामो-निशान तक मिट सकता है।

इन सम्भावनाओं के सन्दर्भ में ही आइये आवश्यकता के प्रश्न को लें। पूंजीवाद में उत्पादक शक्तियों का सतत विकास होता है: मजदूर लगा कर मंडी के लिए उत्पादन पूंजीवाद की चारित्रकता है। लेकिन एक स्तर से आगे बढ़ जाने के बाद, जैसे कि आज, उत्पादक शक्तियों का मंडी के लिए उत्पादन के लिए प्रयोग सम्पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया को बड़बड़ाने लगता है कारणों में हम यहां नहीं जायेंगे, बस इतना ही कहेंगे कि पूंजीवादी व्यवस्था के संकट बढ़ने लगते हैं और बढ़ते ही जाते हैं। इससे सामाजिक असन्तोष के बढ़ने के साथ—साथ पूंजीवादी गिरोहों में टकराव भी बढ़ने लगते है। इस सिलसिले में पूंजीवादी युद्ध अथवा क्रान्तिकारी परिवर्तन आवश्यकता बन जाते हैं। इस सदी में ही हम दो पूंजीवादी विश्व युद्ध और बड़ी सख्या में अन्य पूंजीवादी युद्धों में करोड़ों लोगों का कत्ल भुगत चुके हैं—पूंजीवादी व्यवस्था के संकटों के फलस्वरूप पूंजीवादी युद्धों की आवश्यकता को वास्तविकता में बदलते देख चुके हैं। और आज के विनाश के साधनों तथा पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकटों के दृष्टिगत पूंजीवाद के बने रहने पर समस्त मानव जाति के विनाश की आवश्यकता हमारे सामने मुंह बाये खड़ी है। ऐसे में पूंजीवाद का नाश करने वाला क्रान्तिकारी परिवर्तन हमारे लिए सर्वोपरि महत्व की आवश्यकता बन जाता है। पेरिस कम्यून और सोवियतों का निर्माण इस आवश्यकता को वास्तविकता में बदलने की दिशा में किये गये महान प्रयास हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हंसी—खुशी भरे खुशहाल समाज की सम्भावना को वास्तविकता में बदलने के लिए ही नहीं बल्कि पृथ्वी पर मानव के बने रहने तक के लिए भी कम्युनिस्ट समाज का निर्माण एक आवश्यकता बन गया है। और मार्क्सवाद के अनुसार इस सम्भावना तथा आवश्यकता को वास्तविकता में बदलने के लिए क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन का विकास, सचेत क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन का विकास सर्वोपरि महत्व का है।

आगे बढ़ने से पहले हम समाजवाद/साम्यवाद का अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करेंगे।

[जारी] —ओ

—0—

(सभा पर रोक·····का शेष)

यह है वह हालात जिनकी वजह से दो अक्टूबर को भिलाई में एक सभा की सूचना ने पूंजी के नुमाइन्दों में हड़कम्प मचा दी। अगस्त माह में ही इस दो अक्टूबर को सभा करने की इजाजत के लिए भिलाई स्टील प्लान्ट की मैनेजमेंट से आवेदन किया गया था। स्टील प्लांट मैनेजमेंट ने आवेदन को जिला प्रशासन के पास भेज दिया। इस पर मैनेजमेंटों, ठेकेदारों, अधिकतर पूंजीवादी राजनेताओं और लगभग सभी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के नेताओं ने जिला प्रशासन पर दो अक्टूबर की सभा पर पाबन्दी लगाने के लिए दबाव डालना आरम्भ किया। और 29 सितम्बर को डी. सी. ने वह सभा करने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री से सभा के आयोजकों ने बात चीत की पर फिर भी भिलाई में सभा करने की इजाजत नहीं दी गई। दो अक्टूबर की यह सभा रायपुर में हुई।

अस्सी—नब्बे साल से दुनियां में जगह जगह का अनुभव इस नये तथ्य को उभार रहा है कि पूंजी के शासन का स्वरूप अब मजदूरों के लिए अधिक महत्व का प्रश्न नहीं रहा है। पूंजीवाद की मरणासन्न, पतनशील अवस्था में मजदूरों के लिए महत्व के मुद्दों पर पूंजीवादी जनतन्त्र और पूंजीवादी एकतन्त्र में उल्लेखनीय तौर पर "कम बुरा" कोई सा नहीं है। अतः क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के विकास के लिए जहां पूंजीवादी कानूनों का हर सम्भव उपयोग अवश्य करना चाहिए वहीं यह भी ध्यान में रखने की जरूरत है कि पूंजीवादी जनतन्त्र बनाम पूंजीवादी एकतन्त्र के दंगल में किसी का भी पक्ष लेना मजदूरों के लिए दल-दल में धंसने की राह है—यूं भी पूंजीवादी जनतन्त्र में पूंजीवादी गुटों में चुनने के चक्कर में इन चालीस साल में मजदूर यहां कम उल्लू नहीं बने हैं। आज हालात यहां नंगे दमन की काली रात के शीघ्र आगमन के बन रहे हैं। हिन्दूवादी अथवा फौजी हिटलर के पदार्पण की पूर्ववेला में पूंजीवादी जनतन्त्र और पूंजीवादी एकतन्त्र के प्रश्न पर ठन्डे दिमाग से विचार करने का यह समय है। इस मौके को गवांयें नहीं अन्यथा बहुत भारी कीमत चुकाने के बाद भी पूंजीवादी जनतन्त्र की डुगडुगी ही यहां फिर बजेगी·····

1977 में जनता पार्टी ने सत्ता में आते ही अपनी डिमान्डों के लिये संघर्ष कर रहे भिलाई की लोहा खदानों के मजदूरों की पुलिस फायरिंग द्वारा जानें ली थी। इससे कांग्रेस इमरजेन्सी और जनता पार्टी संपूर्ण क्रान्ति की हकीकत की एक झलक सामने आई थी। 2 अक्टूबर 90 को भिलाई में मजदूरों की प्रमुखता से उपस्थिति वाली सभा पर पाबन्दी पूंजीवादी जनतन्त्र और मजदूरों के संबन्धों की हकीकत की एक झलक दिखाती है आइये आंख खोलकर देखें।

—0—

(मुनिडीह हड़ताल का शेष·····)

धनबाद से चल कर 17 अगस्त का जलूस मुनिडीह पहुंचा वहां मजदूर बस्ती से जब जलूस गुजर रहा था तब काफी और मजदूर उसमें शामिल हो गए। गुन्डों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। हड़ताल में मजबूती आई—70-80 प्रतिशत मजदूर हड़ताल में शामिल हो गए। 22 अगस्त को डेढ़ हजार मजदूरों ने पटना जा कर वहां जलूस निकाला और वहां से लौटकर वह जलूस धनबाद जिला जेल पहुचा। घबराये जेल प्रशासन ने पूंजीवादी कानूनों को धत्ता बताकर 23 को सुबह साढ़े छह बजे ही मजदूरों को अपने गिरफ्तार साथियों से मिलने दिया, और वह भी तीस-तीस, चालीस चालीस के समूहों में।

अपनी सामुहिक शक्ति का अहसास बढ़ते जाने के साथ मजदूरों का जोश भी बढ़ने लगा। 25 अगस्त को मुनिडीह में एक बड़े जलूस और सभा का आयोजन किया गया। गुन्डों ने हताशा में इधर-उधर बम फोड़कर इसे फेल करने की कोशिश की पर उन्हें मुंह की खानी पड़ी। हड़ताली मजदूरों की ताकत बढ़ती देख कर अन्य संगठन भी उनके समर्थन में आने लगे। एक संयुक्त मोर्चा बना और 29 अगस्त को मुनिडीह में इसकी सफल सभा हुई। तीस अगस्त को हड़ताली मजदूरों और उनके समर्थकों ने फिर कोयला भवन को घेर लिया। घबराई हुई मैनेजमेंट ने बात-चीत का प्रस्ताव रखा।

एक सितम्बर को नेगोशियेशन पुनः आरंभ हुई। मैनेजमेंट कुछ झुकी कई उतार-चढ़ाव और दमन-आतंक के दौर से गुजरे मजदूर छाती तानकर तीन सितम्बर से काम पर लौटे।

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित